दसों भोम बरनन भोम पेहेली

बड़ा चौक सोभा लेत है, बड़े दरवाजे अंदर।
बड़ी बैठक इत गिरोह की, आगूं रसोई के मन्दिर।। १ ।।

रंग महल के बड़े दरवाजे के अन्दर अट्ठाईस थंभ का चौक है। जहां आते-जाते सखियां बैठती हैं। इसके आगे रसोई की हवेली है।

दस स्याम सेत के लगते, दस मंदिर सामी हार।
इन चौक की रोसनी, मावत नहीं झलकार।। २ ।।

इस रसोई की हवेली की पूरब दिशा में देहलान (दालान) के दाएं-बाएं पांच-पांच मंदिर हैं। इससे लगते उत्तर की दिशा में श्याम रंग के मन्दिर के साथ सीढ़ियों का मन्दिर है और साथ लगता सफेद मन्दिर आया है। कोने का मन्दिर छोड़कर उत्तर दिशा में इस प्रकार दस मन्दिर आए हैं।

कई नकस कई कटाव, इन भोम में देखत।
दिन पंद्रा खेलें बन में, पंद्रा आरोगें इत।। ३ ।।

इस भोम में कई किस्म की नक्शकारियां और कटाव हैं। श्री राजश्यामाजी और सखियां सायं पन्द्रह दिन वन में आरोगते हैं और पन्द्रह दिन इस रसोई की हवेली में आरोगते हैं।

इन चौक में साथजी, बोहोत बेर बैठत।
आवत जात बनथें, बैठत इत अलबत।। ४ ।।

इस रसोई की हवेली में सखियां निस्सन्देह कई बार आते-जाते बैठती हैं। सायंकाल जब वन से लौटती हैं तो अवश्य ही यहां बैठती हैं।

लाड़बाई के जुत्थ की, इत बोहोत खेल करत।
बाहेर अंदर चौक में, बन मोहोलों सुख लेवत।। ५ ।।

लाड़बाई के जुत्थ की सखियां यहां रसोई खिलाने की सेवा में भाग-दौड़ करती हैं। बाहर, अन्दर, चौक में, कभी वन में, कभी महलों में भोजन होता है।

बन मोहोल विलास को, सुख गिनती में आवत नाहें।
ए न कछू जुबां केहे सके, चुभ रहत चित माहें।। ६ ।।

पन्द्रह दिन वन के, पन्द्रह दिन रसोई की हवेली के आनन्द के अपार सुख हैं जिनको गिना नहीं जा सकता। जबान से कुछ बयान नहीं किया जा सकता। यह सुख हृदय में ही जाने जाते हैं।

राज स्यामाजी बैठत, बनथें फिरती बखत।
इन ठौर आरोग के, चौथी भोम निरत।। ७ ।।

श्री राजश्यामाजी वन से लौटते समय यहां बैठकर आरोगते हैं। फिर चौथी भोम में नृत्य देखते हैं।

जैसा चौक तले का, तैसा ही ऊपर।
आगूं झरोखे दूजी भोम के, इत चौक बीस मंदिर।। ८ ।।

जैसा रसोई की हवेली का चौक नीचे है वैसा ही ऊपर है। दूसरी भोम में चारों तरफ बीस-बीस मंदिर, चार दरवाजे और चार कोने छोड़कर आए हैं।

Nijanand App

इसी भांत भोम तीसरी, ऊपर चढ़ती चढ़ती जे।
खूबी लेत अति अधिक, चौक ऊपर चौक ए।। ९ ।।

इस तरह से तीसरी भोम और ऊपर की भोम में चौक के ऊपर चौक की अधिक शोभा है।

नवों भोम इन विध की, आगूं उपरा ऊपर बड़े द्वार।
आगे चौक सबन के, सबों फिरते थंभ हार।। १० ।।

नौ भोमों में बड़े दरवाजे के उपरा ऊपर बीस थंभ आए हैं और सबके आगे देहलान है।

और विध केती कहूं, भोम भोम ठौर अनेक।
ए कोट जुबां ना केहे सके, तो कहा कहे रसना एक।। ११ ।।

इन हवेलियों की हकीकत कहां तक कहूं? हर भोम में हवेली बहुत हैं जिनका वर्णन करोड़ों जबान से नहीं हो सकता तो एक जबान से कैसे हो?

भोम दूसरी

स्याम सेत के बीच में, सीढ़ियां सुन्दर सोभित।
बोहोत साथ इत आए के, चढ़ उतर करत।। १२ ।।

रसोई की पहली हवेली के उत्तर में श्याम मन्दिर और सफेद मन्दिर के बीच वाले मन्दिर में सीढ़ियां हैं। जहां से सखियां उतरती-चढ़ती हैं।

इतथें चले खेलन को, आगूं मंदिर जहां भुलवन।
जब जात चेहेबच्चे झीलने, तब खेलें ठौर इन।। १३ ।।

यहां से जहां भुलवनी के मन्दिर है, वहां खेलने जाते हैं। यहीं पर खड़ोकली का चहबच्चा है जब उसमें झीलना (स्नान) करने जाते हैं, तो यहां खेल करते हैं।

खेल करें इत भुलवनी, मंदिर एक सौ दस की हार।
सो हर तरफों गिनिए, एही गिनती तरफ चार।। १४ ।।

भुलवनी में एक सौ दस मन्दिर की एक सौ दस हारें हैं। चारों तरफ से गिनो, तो यह शोभा है।

ए भुलवनी ऐसी भई, देखी चारों किनार।
द्वार सबों बराबर, भए मंदिर बारे हजार।। १५ ।।

यह भुलवनी इस तरह की बनी है जिसे चारों तरफ से एक सौ दस की एक सौ दस हारें गिनने से बारह हजार एक सौ मन्दिर आते हैं सौ मन्दिर का मध्य में चौक आया है जिसे छोड़कर मन्दिर बारह हजार आए हैं और हर मन्दिर में दरवाजे बराबर आए हैं।

मंदिर जुदे कर गिनिए, हर मंदिर दरवाजे चार।
यों गिनती बारे हजार की, भए अड़तालीस सहस्त्र द्वार।। १६ ।।

अलग-अलग मन्दिरों में गिनें, तो हर मन्दिर में चार दरवाजे हैं। इस तरह से बारह हजार मन्दिर के अड़तालीस हजार दरवाजे होते हैं।

Nijanand App

सो ए भई इत भुलवनी, भए द्वार चौबीस हजार।
एक दूजे में गिनात है, खेलें हंसें रूहें अपार।। १७ ।।

यही भूल हो गई। वास्तव में दरवाजे चौबीस हजार हैं जब एक-दूसरे को मिलाकर गिनते हैं, क्योंकि प्रत्येक दरवाजा दो मन्दिर में बोलता गिना जाता है। यहां श्री राजश्यामाजी व रूहें खेलती हैं।

रूहें द्वार एक दौड़के, चौथे जाए निकसत।
प्रतिबिंब उठें कई तरफों, कोई काहूं ना पकरत।। १८ ।।

रूहें एक दरवाजे से दौड़कर चौथे दरवाजे से निकल जाती हैं। यह मन्दिर शीशे के बने हैं। जिनके कई प्रतिबिम्ब कई तरफ उठते हैं और कोई किसी को पकड़ नहीं पाता।

भागत एक मंदिर से, प्रतिबिंब उठें अपार।
पकड़न कोई न पावहीं, निकस जाएं कई द्वार।। १९ ।।

एक मन्दिर से जब भागते हैं तो बेशुमार प्रतिबिम्ब उठते हैं कई दरवाजों से पार करके निकल जाते हैं। कोई पकड़ नहीं सकता।

इन ठौर खेल रूहन के, बोहोत भई भुलवन।
होत हांसी इत खेलते, रंग रस बढ़त रूहन।। २० ।।

रूहों को इस ठिकाने पर बहुत बार भूलना पड़ता है। इस खेल में इस तरह की हंसी होती है और आनन्द बढ़ता है।

इनहूं बीच चबूतरा, हक हादी मध बैठत आए।
ए सोभा इन बखत की, इन मुख कही न जाए।। २१ ।।

इस हवेली के बीच में दस मन्दिर का लम्बा-चौड़ा चबूतरा है, जहां श्री राजश्यामाजी बीच में बैठते हैं। इस समय की शोभा इस मुख से कही नहीं जाती।

दूजी भोम का चेहेबच्चा, धनी बैठत इत अन्हाए।
सिनगार समें रूहन के, इन जुबां कह्यो न जाए।। २२ ।।

दूसरी भोम के चहबच्चे खड़ोकली में श्री राजजी महाराज स्नान करके चबूतरे पर बैठते हैं और सिनगार के समय रूहें जो सेवा करती हैं, वह इस जबान से कही नहीं जाती?

इत खेल के आए चेहेबच्चे, अन्हाए के कियो सिनगार।
पीछे चरनों लागें जुगल के, माहें माए ना मन्दिरों झलकार।। २३ ।।

श्री राजजी, श्यामाजी और सब सखियां भुलवनी में खेल करने के बाद खड़ोकली में नहाते हैं और सिनगार करते हैं। इसके बाद श्री राजश्यामाजी के चरणों में प्रणाम करती हैं, इस लीला की झलकार मन्दिरों में समाती नहीं है।

ए नेक कही इन ठौर की, इत हिसाब बिना बैठक।
सुख देत इत कायम, जैसा बुजरक हक।। २४ ।।

यह थोड़ी सी हकीकत इस ठिकाने की बताई है। यहां बैठने के कई ठिकाने हैं। ऐसे श्री राजजी महाराज अपनी रूहों को अखण्ड सुख देते हैं।

Nijanand App

ए दूजी भोम जो अर्स की, इत बोहोत बड़ो विस्तार।
ए नेक नेक केहेत हों, जुबां कहा कहे सिफत सुमार।। २५ ।।

दूसरी भोम की शोभा का बहुत भारी विस्तार है। मैंने थोड़ा-थोड़ा कहा है। इस जबान से बेशुमार शोभा की सिफत कैसे कहें?

भोम तीसरी

बैठ हक हादी भोम तीसरी, जित आवत नूरजलाल।
इत दोए पोहोर की बैठक, और सेज्या सुख हाल।। २६ ।।

श्री राजश्यामा जी तीसरी भोम में विराजते हैं जहां अक्षर ब्रह्म दर्शन करने आते हैं। यहां श्री राजजी महाराज की बैठक दोपहर तक होती है और एक पहर सुख सेज्या पर आराम होता है।

बीच बन्या दरवाजा दो हांस का, बीच दस झरोखे।
पांच बने बांईं हांस के, पांच दाहिनी से।। २७ ।।

धाम-दरवाजे का हांस, दाएं-बाएं वाले हांसों से पांच-पांच मन्दिर लेकर बनाया जिसमें दस झरोखे सुन्दर शोभा देते हैं।

बड़े झरोखे तिन पर, तिन पर बड़े देहेलान।
इत आए फजर पसु पंखियों, दीदार देत सुभान।। २८ ।।

धाम-दरवाजे के ऊपर तीसरी भोम में एक बड़ा झरोखा देहलान के रूप में आया है। यहां पशु-पक्षियों को प्रातः श्री राजजी महाराज दर्शन देते हैं।

देहेलान दस मन्दिर का, झरोखे दस सामिल।
माहें चौक दस मन्दिर का, हुए तीनों मिल कामिल।। २९ ।।

यह देहलान दस मन्दिर की लम्बी एक मन्दिर की चौड़ी आई है जो मध्य के दस मन्दिरों की जगह पर आई है यहां मन्दिर नहीं आए हैं मात्र थंभें और मेहरावें आई हैं। आवश्यकता पड़ने पर जालीदार दीवार आ जाती है। तब यह सेज्या का मन्दिर बनता है। इस देहलान के पूरब की तरफ किनारे पर पांच रंग के जो दस थंभ आए हैं, कठेड़ा आने से एक दस मन्दिर का लम्बा झरोखा हुआ। अब देहलान और झरोखे के बीच की जगह दस मन्दिर की लम्बी, दो मन्दिर की चौड़ी पड़साल की जगह तथा अट्ठाईस थंभ के चौक चार मन्दिर की लम्बाई, एक मन्दिर की चौड़ाई में रौंस कमर भर ऊंची होने से पूरा चबूतरा कहलाती है। इन तीनों का एक रूप है।

तीसरा हिस्सा एक हांस का, ए जो दस झरोखे।
द्वार थंभ आगूं इन, ना दिवाल बीच इनके।। ३० ।।

एक हांस के तीसरे हिस्से में दस मन्दिर के स्थान पर दस झरोखे आए हैं। इसके आगे पहली हार मन्दिर की जगह दस मन्दिर नहीं हैं थंभ हैं जो देहलान कहलाती है।

और सुख इन भोम के, बोहोत बड़ो विस्तार।
सो मुख बानी क्यों कहूं, जिनको नहीं सुमार।। ३१ ।।

तीसरी भोम के इन सुखों का बहुत बड़ा विस्तार है। इस मुख से बेशुमार सुखों का कैसे वर्णन करूं?

Nijanand App

मंदिर दस का बेवरा, दस का एकै देहेलान।
माहें बाहेर बराबर, जानें मोमिन अर्स बयान।। ३२ ।।

दस मन्दिर की लम्बी और चार मन्दिर की चौड़ी देहलान अन्दर-बाहर चारों तरफ से बराबर है। मोमिन इस चीज को समझ लेंगे।

और जो झरोखे गिरदवाए के, तिनही के सरभर।
एता ऊंचा जिमी से, देखें हुकमें रूहें नजर।। ३३ ।।

और जो घेरकर झरोखे आए हैं वह सब एक समान ऊंचे हैं। जितना पहली भोम जमीन से ऊंची है (२२ हाथ है) उतने ही ऊंचे बाकी दिखाई देते हैं।

छे मन्दिर आगूं सीढ़ियां, दोऊ तरफ चढ़ाए।
चौक छोटे आगूं देहरी, सोभा इन मुख कही न जाए।। ३४ ।।

नीले, पीले, हरे दोनों तरफ के छः मन्दिर की देहरी के आगे दोनों तरफ तीन-तीन सीढ़ियां हैं और सामने रौंस के चौक हैं। जिसकी शोभा वर्णन करने में नहीं आती।

और चौक बड़ा जो बीच का, सीढ़ी सनमुख आगूं द्वार।
सोए बराबर द्वार के, सोभा कहूं जो होए सुमार।। ३५ ।।

अट्ठाईस थंभ के पूर्व की ओर अधबीच के बड़ी मेहराब के नीचे तीन सीढ़ियां चढ़कर द्वार से चौक पर आइए। जिसकी शोभा बेशुमार है।

दोऊ तरफों खिड़कियां, तिन आगूं बढ़ती पड़साल।
ए रूहें नजरों नीके देखहीं, तो तेहेकीक बदले हाल।। ३६ ।।

इसके दोनों तरफ तीन-तीन मन्दिर, जिनमें दीवारें नहीं हैं, देहलान हैं उनके पूरब-पच्छिम दोनों तरफ मेहराब में खिड़कियां हैं और उसके आगे पूरब दिशा में पड़साल है। हे परमधाम के मोमिनो! अच्छी तरह से देखेंगे तो निश्चय ही परमधाम की याद आएगी।

और आरोगें भी इतहीं, इत बैठें नूरजमाल।
दौड़त रूहें निहायत, ए क्यों कहूं खुसाली ख्याल।। ३७ ।।

और इसी पड़साल में श्री राजजी और श्री श्यामाजी बैठकर दोपहर को आरोगते हैं। रूहें दौड़-दौड़कर सेवा करती हैं। इस खुशी का वर्णन कैसे करूं?

बड़ी बैठक पड़साल की, इत मेवा मिठाई आरोगत।
कर सिनगार चरनों लगें, सबे इत बैठत।। ३८ ।।

यहां पड़साल में श्री राजश्यामाजी बहुत देर तक बैठते हैं और मेवा मिठाइयां आरोगते हैं। रूहें भी सिनगार करने के बाद यहीं चरणों में प्रणाम करके बैठती हैं।

सिनगार करें देहेलान में, आरोगें और मंदिर।
इतहीं दीदार नूर को, दिन पौढ़ें पलंग अंदर।। ३९ ।।

इस देहलान में श्री राजजी महाराज को सखियां सिनगार कराती हैं। सखियां रसोई की हवेली में आरोगती हैं और इसी पड़साल के बड़े झरोखे से श्री राजजी महाराज अक्षर ब्रह्म को दर्शन देते हैं। दोपहर तीसरे पहर में यहीं नीले-पीले मन्दिर में विश्राम करते हैं।

Nijanand App

दो हांस बीच तीसरा हिस्सा, तिनके झरोखे दस।
एक हांस तिनकी बढ़ी, ए भी सोभा एक रस।।४०।।

बीच के दो हांसों में से पांच-पांच मन्दिर लेकर यह मुख्य द्वार का हांस बनाया गया है। जिन दस मन्दिरों के दस झरोखे और संख्या में एक हांस के बढ़ने से रंग महल के २०१ हांस हो गए। इसकी शोभा बड़ी बेशुमार है।

बड़ा दरवाजा इनमें, बीच दोए हांस इन।
भोम तले लग चांदनी, ए खूबी अति रोसन।।४१।।

इन दो हांसों के बीच में रंग महल का बड़ा दरवाजा है। नीचे की भोम से चांदनी तक इस दरवाजे की शोभा अपार है।

अंदर चौड़ाई चौक की, और भी हैं कई ठौर।
जुदे जुदे सुख लेत हैं, रंग रस कई और और।।४२।।

रंग महल के अन्दर कई चौरस हवेलियां हैं और कई ठिकाने (चौक) हैं। जहां पर तरह-तरह के आनन्द के सुख लेते हैं।

भोम चौथी

निरत होत चौथी भोम में, जित मोहोल बन्यो विसाल।
चौक मध्य अति सुन्दर, क्यों कहूं मंदिर द्वार।।४३।।

चौथी भोम में अट्ठाईस थंभ के चौक के आगे चौरस हवेलियों की चौथी हवेली नृत्य की हवेली है। इसके बीच सुन्दर चबूतरा बना है। मन्दिर और दरवाजों की शोभा कैसे बताऊं?

तीनों तरफों मंदिर, आगूं दो दो थंभों की हार।
बड़ा मोहोल अति सोभित, सुन्दर अति सुखकार।।४४।।

इस हवेली के उत्तर, पच्छिम, दक्षिण तीन दिशाओं में मन्दिर हैं और आगे पूरब की दिशा में बीस मन्दिरों की जगह पर दो थंभों की हार आई हैं। यह एक बड़ा महल अति सुन्दर और सुखदायी है।

थंभ द्वार अति सोभित, तरफ तीनों साठ मंदिर।
बीस बीस हर तरफों, चौक बैठक अति अंदर।।४५।।

इसके थंभ, दरवाजे तथा तीन तरफ के साठ मन्दिर जो बीस-बीस हर दिशा में हैं तथा अन्दर के चौक में बैठक अत्यन्त सुन्दर है।

द्वार सोभित कमाड़ियों, साठों करें झलकार।
और जोत थंभन की, सुख कहूं जो होए सुमार।।४६।।

तीनों तरफ के साठ मन्दिरों के किवाड़ झलकार करते हैं और थंभ भी बहुत तेजमयी हैं जिनके सुख बेशुमार हैं। कैसे कहे जाएं?

पीठ पीछे जो मन्दिर, कई रंग सेत दिवाल।
दाहिनी तरफ लाखी मंदिर, क्यों कहूं नकस मिसाल।।४७।।

पच्छिम की तरफ मन्दिर की दीवार सफेद रंग की है। दाहिनी तरफ की दीवार और मन्दिर लाखी रंग का है। इनकी चित्रकारी बेमिसाल है।

Nijanand App

बांईं तरफ दिवाल जो, मंदिर लिबोई रंग।
बेल नकस कटाव कई, सो केते कहूं तरंग।।४८।।

बाईं तरफ की दीवार और मन्दिर पीले नीबू जैसे रंग के हैं। जिनमें कई रंग की बेलें और चित्रकारी हैं। जिनकी बेशुमार तरंगें उठती हैं।

हरी दिवाल जो मंदिर, सो सामी है नेक दूर।
चारों तरफों अर्स जवेर, करें जंग नूर सों नूर।।४९।।

तीसरी हवेली की पच्छिम की दीवार तथा बीच के चार थंभों की हारें हरे रंग की हैं। यह दीवार दूसरी दीवारों से कुछ दूर हैं। इस तरह से चारों तरफ के जवेरों के नगों की किनारें आपस में टकराती हैं।

एह ठौर है निरत की, सो केता कहूं मजकूर।
चारों तरफों ऊपर तले, कहूं मावत नहीं जहूर।।५०।।

इस ठिकाने पर नृत्य होता है। उसकी शोभा कैसे बताऊं? हवेली में चारों तरफ ऊपर-नीचे सुन्दर नृत्य होता दिखाई देता है।

राज स्यामाजी बीच में, बैठक सिंघासन।
रूहें बारे हजार को, हक देत सुख सबन।।५१।।

श्री राजश्यामाजी चौक के बीच सुन्दर सिंहासन पर विराजते हैं और बारह हजार रूहों को अपार सुख देते हैं।

कई विध के बाजे बजें, नवरंग बाई नाचत।
हाथ पांउं अंग बालत, कही न जाए सिफत।।५२।।

यहां कई तरह के बाजे बजते हैं और नवरंगबाई नृत्य करती हैं। वह हाथ-पांव, अंग इस तरह से मोड़ती हैं कि उसकी सिफत नहीं कही जाती।

ले बाजे रूहें खड़ी, मृदंग जंत्र ताल।
रंग रबाब चंग तंबूरा, बोलत बेन रसाल।।५३।।

उनके जुत्थ की रूहें बाजे लेकर खड़ी होती हैं जिनमें मृदंग, खड़ताल, जंत्र, चंग, तंबूरा बड़े स्वर से मीठी आवाज निकालते हैं।

पांउं झांझर घूंघर बोलहीं, कांबी कड़लो बाजत।
याही तरह अनवट बिछुआ, संग लिए गाजत।।५४।।

नवरंगबाई के पैर में झांझरी, घूंघरी, कांबी और कड़ला की आवाज होती है। इसी तरह से अनवट और बिछुआ की आवाज होती है।

हाथ कंकन नंग नवघरी, स्वर एकै रस पूरत।
और भूखन सबों अंगों, सोभित सब सूरत।।५५।।

हाथ में कंगन और नवघरी की आवाज के स्वर निकलते हैं और भी सब अंगों के आभूषण बजते हैं।

Nijanand App

जिन विध पाउं चलावहीं, सोई भूखन बोलत।
जो बजावें झांझरी, तो घूंघरी कोई ना चलत।।५६ ।।

नवरंगबाई जिस तरह से पैर चलाती हैं वही आभूषण बोलते हैं। जब वह झांझरी की आवाज निकालना चाहती हैं तो घूंघरी, आदि की आवाज नहीं निकलती।

जो बोलावत घूंघरी, तो नहीं झांझरी बान।
जो सबे बोलावत, तो बोलें सब समान।।५७ ।।

जब वह घूंघरी की आवाज चाहती हैं तो झांझरी की आवाज नहीं निकलती है। जब वह सबकी आवाज चाहती हैं तो सभी आभूषण एक साथ बोलते हैं।

प्रेम रसायन गावत, अति प्यारी मीठी बान।
याही विध हस्त देखावहीं, फेर फेर देत हैं तान।।५८ ।।

वह प्रेम के रस भरी वाणी अपनी मधुर रसभरी आवाज से बोलती हैं। अपने हाथों की कला दिखाती हैं। फिर सुन्दर तान लगाती हैं।

कई जुदे जुदे बोलें भूखन, सब बाजे मिलावत संग।
एक रस सब गावत, नवरंग — बाई के रंग।।५९ ।।

भूषनों के जुदा-जुदा स्वरों में सब बाजों की ध्वनि मिलती है। सभी बाजे और आभूषण नवरंगबाई के नृत्य के साथ में एक रस बजते हैं और गाते हैं।

हाथ धरत मृदंग पर, जब अव्वल स्वर करत।
निरत करें कई विधसों, कई गुन कला ठेकत।।६० ।।

जब मृदंग पर हाथ रखते हैं तो सुन्दर स्वर निकलते हैं। उनके साथ कई गुण, कला, दिखाती हुई कई तरह से नवरंगबाई नाचती हैं।

कई गत भांत रंग ल्यावत, ए तो कामिल निरत कमाल।
इन छेक बालन की क्यों कहूं, जो देखत नूर जमाल।।६१ ।।

नवरंगबाई की चाल आनन्द में बदल जाती है और वह बहुत कमाल का नृत्य करती हैं। इनके ठेक देने की कला बड़ी विचित्र है जिसे श्री राजजी महाराज देखते हैं।

कई विध कहूं बाजंत्र की, कई विध नट नाचत।
कई विध की फेरी कहूं, कई रंग रस गावत।।६२ ।।

नृत्य में कई तरह के बाजे बजते हैं और कई तरह नवरंगबाई नट की तरह नाचती हैं। कई तरह से घूमकर आनन्द में मग्न होकर गाती हैं।

नामै जाको नवरंग, ताकी निरत कहूं क्यों कर।
अनेक गुन रंग ल्यावहीं, नए नए दिल धर।।६३ ।।

जिनका नाम ही नवरंगबाई है उनकी नृत्य का क्या कहना? वह नए-नए विचार दिल में लेकर नई-नई कलाओं से आनन्द बढ़ाती हैं।

Nijanand App

मुरली बजावत मोरबाई, बेनबाई बाजंत्र।
तानबाई तान मिलावत, निरत जामत इन पर।।६४।।

मोरबाई मुरली बजाती हैं। बेनबाई बाजे बजाती हैं। तानबाई तान मिलाती हैं। इस तरह से नृत्य की शोभा बढ़ जाती है।

कंठ केलबाई अलापत, स्वर पूरत बाईसेंन।
सब मिल गावें एक रस, मुख बानी मीठी बैन।।६५।।

केलबाई अपने कंठ से राग अलापती हैं। सैनबाई स्वर पूरती हैं। तब सब एक साथ मिलकर एक स्वर और एक ताल में मीठी वाणी बोलकर आनन्द बढ़ाती हैं।

झरमरबाई बजावत, माहें झरमरी अमृती।
कई बाजे कई रंग रस, ए रंग अलेखे कहूं केती।।६६।।

झरमरबाई मधुर स्वर में झरमरियां बजाती हैं। कई तरह के बाजे एक रस और एक राग में बजते हैं। जिनके आनन्द की शोभा बेशुमार है।

खड़ियां रूहें निरत में, इत उछरंग होत।
तरफ चारों जवेरन में, निरत देखे अधिक जोत।।६७।।

रूहें नृत्य की हवेली में जब खड़ी होती हैं तो मन बड़ा आनन्दित होता है। हवेली में चारों तरफ सुन्दर नृत्य होता है।

निरत कला सब नाच के, फेर फेर देत पड़ताल।
यों स्वर मीठे मोहोलन के, चलत आगूं मिसाल।।६८।।

नृत्य की कला दिखाकर फिर पांव की पड़ताल देती हैं। जिसके स्वर पूरी हवेली में गूंज जाते हैं।

ऐसे ही प्रतिबिंब इनके, मोहोल बोलें कई और।
बानी बाजे निरत अवाजे, होत निरत कई ठौर।।६९।।

इनके प्रतिबिम्ब भी इसी तरह से हवेली के बीच बोलते और नाचते हैं। इनकी बोली तथा नृत्य की आवाज कई ठिकाने पर सुनाई तथा दिखाई देती है।

साम सामी पसु पंखी नंग के, जंग करें जवेरों दोए।
एक ठौर निरत नाचत, ठौर ठौर सामी होए।।७०।।

हवेली की दीवार पर नगों के बने पशु-पक्षियों की तरंगें आपस में टकराती हैं। नृत्य एक ठिकाने होता है और दिखाई दूर-दूर देता है।

यों सब ठौर जंग अर्स में, कहूं केती विध किन।
अपार अखाड़े सब दिसों, होत सब में रोसन।।७१।।

इस तरह सब ठिकानों पर परमधाम में आवाज टकराती है। इसकी हकीकत कहने में आती नहीं है। वहां सब बैठने के ठिकानों में दसों दिशाओं में नृत्य होता दिखाई देता है।

Nijanand App

ए रूह की आंखों देखिए, असल बका के तन।
तो देखो चित्रामन धामकी, करत निरत सबन।।७२ ।।

यदि आप अपनी परआतम की नजर से देखो, तो जितने भी चित्र परमधाम में हैं सबमें नृत्य होता दिखाई देता है।

एह खेल एक पोहोर लग, होत हमेसां इत।
पंद्रा दिन जब घर रहें, तब देखें दुलहा निरत।।७३ ।।

यह खेल तीन घण्टे एक पहर रात्रि तक होता है। पन्द्रह दिन जब घर रहते हैं, तो इस हवेली में नृत्य होती है।

मेहेबूब को रिझावने, अनेक कला साधत।
और नजर ना कर सकें, बंध ऐसे ही बांधत।।७४ ।।

श्री राजजी महाराज को रिझाने के लिए नवरंगबाई अनेक तरह की कला दिखलाती हैं और एक ऐसा नृत्य का बंध बांध देती हैं कि सबकी नजर वहीं टिक जाती है।

थंभ दिवालें सिंघासन, सब में होत निरत।
इन समें पसु पंखी चित्रामन के, सब ठौरों केलि करत।।७५ ।।

यहां के थंभों में, दीवारों में, सिंहासन में सब ठिकानों में नृत्य होता दिखाई देता है। इस समय पशु-पक्षियों के चित्र भी सब स्थानों पर नाचते दिखाई देते हैं।

बोहोत बातें बीच अर्स के, किन विध कहूं इन मुख।
जो बैठीं इन मेले मिने, सोई जानें ए सुख।।७६ ।।

परमधाम के बीच की ऐसी बहुत सी बातें हैं। इस मुख से कैसे कहूं? जो सखियां इस हवेली में बैठती हैं इसको वही जानती हैं।

ऐसी चारों तरफों कई बैठकें, अंदर या गिरदवाए।
ए सुख अखंड अर्स के, क्यों कर कहे जांए।।७७ ।।

इसी तरह से अन्दर चारों तरफ कई तरह की बैठकें बनी हैं। यह परमधाम के अखण्ड सुख हैं जो कहे नहीं जाते।

भोम पांचमी पौढ़न की

सुख बड़ो भोम पांचमी, मध्य मंदिर बारे हजार।
बीच मोहोल स्यामाजीय को, इन चारों तरफों द्वार।।७८ ।।

रंग महल के ठीक मध्य में बारह हजार मन्दिर बने हैं जिनके अपार सुख हैं। मध्य में श्यामाजी का मन्दिर है। जिसके चारों तरफ चार दरवाजे हैं।

चौखूंनी बाखर बनी, तिन विस्तार है बुजरक।
चारों तरफों बराबर, कहूं बेवरा बुध माफक।।७९ ।।

यह हवेली चौरस है जिसका बड़ा विस्तार है चारों तरफ से यह एक समान है। उसका विवरण अपनी बुद्धि के माफिक बताती हूं।

Nijanand App

बराबर मोहोल के गिरद, बीच बीच पौरी द्वार।
पौरी के तरफ सामनी, मोहोल दरवाजे चार।। ८० ।।

रंग परवाली के चारों तरफ सीढ़ियां और दरवाजे है। इन सीढ़ियों के सामने रंग परवाली मन्दिर के चारों दरवाजे आते हैं।

मोहोल के चारों खूंने, सोले सोले हवेली।
जमे जो चौसठ कही, तिन द्वार द्वार एक गली।। ८१ ।।

रंग परवाली मन्दिर के चारों कोनों पर सोलह-सोलह हवेलियां आई हैं, अर्थात् चौसठ हवेलियां हैं। इनमें एक एक दरवाजा और एक-एक गली हैं।

ओगन—पचास चौपुड़े, ताके कहूं मंदिर।
हर एक के एक सौ चौबीस, जमे छे हजार छेहत्तर।। ८२ ।।

सात की सात हारें उनचास चौपुड़े (चौराहे) हैं। उनके मन्दिर बताती हूं एक चौपुड़े के एक सौ चौबीस मन्दिर और यह उनचास के छः हजार छेहत्तर हैं।

चौक अठाईस त्रिपुड़े, हर एक के एक सौ दोए।
अठाईस सै छप्पन, जमें मंदिरन को सोए।। ८३ ।।

चौक में चारों दीवारों को लगे हुए अट्ठाईस त्रिपुड़े (तिराहे) हैं। हर एक के एक सौ दो मन्दिर हैं। कुल मिलाकर दो हजार आठ सौ छप्पन मन्दिर हुए।

चौक चार खूंने के दोपुड़े, हर एक के ओनासी मंदर।
तीन सै सोले एह जमें, लगते दिवाल अंदर।। ८४ ।।

चार कोनों पर चार दोपुड़े हैं। हर एक में उन्यासी मन्दिर हैं तीन सौ सोलह मन्दिर यह दोपुड़े के हुए।

चौसठ दरम्यान हवेलियां, सो हिसाब कहूं मंदिरन।
हर एक के तैंतालीस, जमे सताईस सै बावन।। ८५ ।।

चौसठ हवेलियां हैं। उनके मन्दिर के हिसाब बताती हूं। हर एक में तैंतालीस मन्दिर हैं। सभी हवेलियों के दो हजार सात सौ बावन हुए।

जमे कियो मंदिरन को, सब बारे हजार भए।
दरवाजे थंभ गलियां, अब कहूं जो बाकी रहे।। ८६ ।।

अब सब मन्दिरों को जोड़ो। बारह हजार हो गए। अब आगे दरवाजे, थंभ और गलियां जो बाकी रह गए हैं, उनको सुनो।

ओगन पचास चौपुड़े, ताके जमे कियो थंभन।
एक सौ चवालीस हर एकों, जमे सात हजार छप्पन।। ८७ ।।

उनचास चौपुड़े हर एक में एक सौ चवालीस थंभ हैं। कुल थंभ सात हजार छप्पन हैं।

हर एक के एक सौ पंद्रा, ए जो त्रिपुड़े अठाईस।
थंभ जमे बत्तीस सै, और ऊपर भए जो बीस।। ८८ ।।

अट्ठाईस त्रिपुड़ा हैं। एक में एक सौ पन्द्रह थंभ हैं। सब थंभों का योग तीन हजार दो सौ बीस हुआ।

Nijanand App

चार खूंने चार दोपुड़े, पचासी हर एक के।
जमे तीन सै चालीस, एते थंभ भए।। ८९ ।।

चार कोने पर चार दोपुड़े हैं। हर एक के पचासी थंभ हैं। कुल तीन सौ चालीस थंभ हुए।

ए जो चौसठ हवेलियां, तिन हर एक के थंभ चालीस।
तिनके सब जमा कहे, साठ अगले सौ पचीस।। ९० ।।

चौसठ हवेलियां हैं। हर एक में चालीस थंभ हैं। इनके कुल थंभ दो हजार पांच सौ साठ हुए।

जमे सब थंभन को, एक सौ तेरे हजार।
छेहत्तर तिनके ऊपर, एते भए सुमार।। ९१ ।।

सब थंभों को जोड़ें तो तेरह हजार एक सौ छेहत्तर हुए।

ओगन—पचास चौपुड़े, तिन गली गिनों यों कर।
हर एक की चौबीस कही, जमे अग्यारे सै छेहत्तर।। ९२ ।।

उनचास चौपुड़े हैं। एक में चौबीस गलियां हैं। कुल एक हजार एक सौ छेहत्तर गलियां हुईं।

चौक त्रिपुड़े अठाईस, गली हर एक की अठार।
तिनकी ए जमे भई, पांच सै ऊपर चार।। ९३ ।।

त्रिपुड़ा अट्ठाईस हैं। हर एक में अठारह गलियां हैं। सब गलियां पांच सौ चार हुईं।

चौक चार खूंने के दोपुड़े, गली बारे हर एक।
अड़तालीस ए जमे, ए जो गली दिवालों देख।। ९४ ।।

चार कोने के दोपुड़े आए हैं एक में बारह गलियां है तो कुल अड़तालीस गलियां हुईं। यह दीवारों से लगी हैं।

और जो चौसठ हवेलियां, एक एक गली गिरदवाए।
एक एक द्वार दो दो पौरी, इन बिध ए सोभाए।। ९५ ।।

चौसठ हवेलियां हैं। हर एक में एक-एक गली है और एक-एक द्वार है और दरवाजे में दो-दो मेहराबों की शोभा है।

जमे सब गलियन को, सत्रह सै बानबे।
आठों जाम देखिए, ज्यों रूह याही में रहे।। ९६ ।।

सब गलियों का योग एक हजार सात सौ बानवे हुआ। हे रूहो! इनको आठों पहर चित्त में लेकर आनन्द करो।

बड़े दरवाजे चौक के, एक सौ चवालीस।
तैंतीस सै बारे जमे, हर द्वार पौरी तेईस।। ९७ ।।

चौक के बड़े दरवाजे एक सौ चौवालीस हैं। हर दरवाजे में तेईस मेहराबें आई हैं। कुल मेहराबें तीन हजार तीन सौ बारह हुईं।

Nijanand App

यामें बत्तीस द्वार बाहेर के, एक सौ बारे अंदर।
तैंतीस सै बारे जमे, यामें आओ साथ सुन्दर।। ९८ ।।

इसमें बत्तीस दरवाजे बाहर दीवारों के लगते हैं और एक सौ बारह अन्दर की तरफ हैं। इन सबकी कमान तीन हजार तीन सौ बारह बतलाई हैं। सुन्दरसाथजी! इन्हें ध्यान से देखो।

चौखूंनी चौसठ बाखरे, इनों बीच बीच दरम्यान।
दो दो पौरी तिनकी, याको रूहें जानें बयान।। ९९ ।।

यह चौसठ हवेलियां हैं। इनके बीच-बीच में दरवाजे आए हैं और दो-दो मेहराबें आई हैं। इस हकीकत के रूहें जानती हैं।

मन्दिरों माहें खिड़कियां, बाहेर दिवालों के।
चारों खूंने गुरज से, तित दो दो झरोखे।। १०० ।।

बाहर की दीवारों में मन्दिरों के अन्दर खिड़कियां हैं। चारों कोनों पर चारों गुर्ज आए हैं। हर एक के अन्दर दो-दो झरोखे हैं।

भोम पांचमी मध की, इत पौढ़त हैं रात।
स्याम स्यामाजी साथ सब, जोलों होए प्रभात।। १०१ ।।

पांचवीं भोम के मध्य में श्री राजजी महाराज, श्यामाजी, सखियां तब तक शयन करते हैं, जब तक सवेरा नहीं होता।

ए तो मन्दिर कहे मध के, गिरद मन्दिरों हार।
नेक नेक कही अंदर की, और कई विध मोहोल किनार।। १०२ ।।

यह तो मध्य के (बीच के) मन्दिर बताए हैं। इसको घेरकर भी ऐसी और भी आठ हवेलियां चारों तरफ आई हैं। मैंने थोड़ी सी हकीकत अन्दर की कही है। और कई तरह के महल किनारे पर हैं।

भोम छठी सुखपाल

घरों आए पीछे सबन के, छठी भोम सुखपाल।
बने बिराजे मोहोल में, अति बड़ी पड़साल।। १०३ ।।

वन से लौटने पर छः हजार सुखपाल छठी भोम में छः हजार मन्दिर के आगे की देहलान में रहते हैं।

भोम छठी बड़ी जाएगा, है बैठक इत विस्तार।
बीच सिंघासन कई विध के, और झरोखे किनार।। १०४ ।।

छठी भोम की शोभा बहुत भारी है। बीच-बीच में कई तरह के सिंहासन और किनारे पर झरोखे हैं।

जुदी जुदी जुगतों जाएगा, बहु विध सिंघासन।
छोटे बड़े कई माफक, कई छत्र मनी रतन।। १०५ ।।

अलग-अलग जगह में अलग-अलग तरह के सिंहासन हैं। छोटे-बड़े कई तरह के जिनके ऊपर छत्र हैं और मणियां तथा रत्न जड़े हैं।

सुख अलेखे देत हैं, चारों तरफों झरोखे।
ए कायम सुख कैसे कहूं, देत दायम हक जे।। १०६ ।।

चारों तरफ के झरोखे बेशुमार सुखदायी हैं जिनका अखण्ड सुख श्री राजजी हमेशा देते हैं।

Nijanand App

सुख देवें जब अंदर, तब ए बातें मीठी बयान।
रंग रस करें रूहन सों, कोई ना सुख इन समान।। १०७ ।।

इसके अन्दर बैठकर जब सुन्दर मीठी बोली से श्री राजजी महाराज रूहों से बात करते हैं तो इसके समान दूसरा कोई सुख नहीं होता।

कई चौक कई गलियां, कई हवेलियां अनेक।
देख देख के देखिए, जानों एही विध विसेक।। १०८ ।।

यहां कई चौक, कई हवेलियां तथा कई गलियां दिखाई देती हैं। लगता है यही सबसे अच्छी हैं।

बीच तरफ या गिरदवाए, किन विध कहूं मोहोलन।
एह अर्स की रोसनी, क्यों कहे जुबां इन।। १०९ ।।

अन्दर की तरफ या चारों ओर बाहर की तरफ महलों की शोभा बेशुमार है। इस जबान से कैसे कहें?

अनेक विध हैं अर्स में, केती विध कहूं जुबान।
कह्या न जाए एक नकस, मुख कहा करे बयान।। ११० ।।

यहां परमधाम में अनेक तरह की सुन्दरता और चित्रकारी है जिनमें से एक का भी इस मुख से वर्णन नहीं होता।

झरोखे इन भोम के, बने बराबर हर हार।
खूबी नूर रोसनी, क्यों कहूं सोभा अपार।। १११ ।।

इस भोम के झरोखे हर जगह एक जैसे बने हैं, जिनके तेज का वर्णन कैसे करूं? बेशुमार शोभा है।

तेज तेज सों लरत हैं, जहूर जहूर सों जंग।
केते कहूं रंग रंग सों, तरंग संग तरंग।। ११२ ।।

इन झरोखों के तेज तथा सुन्दरता आपस में टकराती हैं। इनके रंगो-तरंगों की शोभा कैसे बताऊं?

भोम सातमी हिंडोले

कहा कहूं भोम सातमी, मध्य मोहोल अनेक।
कई विध गलियां हवेलियां, एक दूजी पे नेक।। ११३ ।।

सातवीं भोम के अन्दर कई महल हैं। कई गलियां तथा हवेलियां हैं जो एक-दूसरे से अच्छी हैं।

कई मोहोल कई मालिए, सोई झरोखे सुन्दर।
द्वार बार सीढ़ी खिड़कियां, अति सोभा लेत मन्दिर।। ११४ ।।

बाहर के महलों में कई तरह के सुन्दर झरोखे हैं जो छज्जों पर बने हैं। दरवाजे, सीढ़ियां, खिड़कियां, मन्दिर सभी की शोभा अच्छी है।

कई सुख सातमी भोम के, कई हिंडोले हजार।
रूहें आप मन चाहते, अर्स आराम नहीं पार।। ११५ ।।

सातवीं भोम में बारह हजार हिंडोले हैं जहां रूहें व श्री राजश्यामाजी मनचाहे तरीके से झूलकर आराम लेते हैं।

Nijanand App

भोम सातमी किनार में, मन्दिर झरोखे जित।
दोनों हारों हिंडोले, छप्पर-खटों के इत।। ११६ ।।

सातवीं भोम में किनारे के मन्दिरों में झरोखे बने हैं। उनके आगे दो थंभों की हार में खट-छप्पर के हिंडोले लगे हैं।

साम सामी बैठी रूहें, हेत में सब हींचत।
कड़े हिंडोले कई स्वर, बहु विध बोलत।। ११७ ।।

यहां रूहें आमने-सामने बैठकर बड़े प्यार से हिंडोले झूलते हैं। हिंडोले कई-कई तरह की आवाज करते हैं।

गिरदवाए सब हिंडोले, जुदी जुदी जिनसों अनेक।
बारे हजार बोलत, स्वर एक दूजे पे विसेक।। ११८ ।।

चारों तरफ के हिंडोले अलग-अलग ढंग के हैं। सब बारह हजार हिंडोले एक-दूसरे से अधिक रसीली आवाज करते हैं।

हांसी होत हैं इन समें, सुन सुन स्वर खुसाल।
हंस हंस के हंसत, सब संग हींचें नूरजमाल।। ११९ ।।

इस तरह के रसीले स्वरों को सुनकर रूहें हंसती और खुश होती हैं। वह हंस-हंसकर श्री राजजी महाराज के साथ झूलती हैं।

ए सुख आनन्द अति बड़ो, रंग रस बढ़त अति जोर।
भूखन हांसी कड़े हिंडोले, ए क्यों कहूं अर्स सुख सोर।। १२० ।।

यहां का सुख और आनन्द बेशुमार है। आभूषण, कड़े, हिंडोले और रूहों की हंसी के सुख बेशुमार हैं।

अतंत सुख इन बखत को, जो कदी आवे रूह माहें।
तो नींद निज अंग असल की, उड़ जावे कहूं काहें।। १२१ ।।

जब कभी रूहें यहां आती हैं तो उस समय बेशुमार सुख होते हैं। उन्हें यादकर अपनी परआतम की नींद उड़ जाती है।

भोम आठमी हिंडोले

इसी भांत भोम आठमी, चार चार खटछप्पर।
चारों तरफों हींचत, ए सोभा कहूं क्यों कर।। १२२ ।।

इसी तरह से आठवीं भोम में चार-चार खट छप्पर के हिंडोले चारों तरफ से झूलते हैं। जिसकी शोभा कैसे कहूं?

चारों तरफों बातें करें, मुख मुख जुदी बान।
रंग रस हांस विनोद की, पिउ सों प्रेम रसान।। १२३ ।।

चारों तरफ से बातें करते हुए तथा अलग-अलग बोली बोलते हुए धनी के साथ रूहें हंसी और विनोद के साथ झूलकर आनन्द लेती हैं।

Nijanand App

चार हिंडोले जुदे जुदे, झूला लेवें सब एक।
एकै बेर सब फिरत हैं, फेर खेल होत विसेक।। १२४ ।।

चार हिंडोले अलग-अलग झूलते समय एक साथ चारों तरफ से आते हैं और एक ही साथ दूसरी तरफ घूम जाते हैं। इस तरह से विशेष तरीके का यह खेल होता है।

और विध बीच हवेलियों, जुदी जुदी कई जिनस।
देख देख के देखिए, एक पे और सरस।। १२५ ।।

हवेलियों के अन्दर की अलग-अलग शोभा है। यह एक से एक सुन्दर दिखाई देती हैं।

मंदिर जुदे द्वार जुदे, कई चौक चबूतर।
ए सनंध इन मंदिरन की, जुबां सके न बरनन कर।। १२६ ।।

सबके मन्दिर, दरवाजे, चौक, चबूतरे अलग-अलग रूप के दिखाई देते हैं। इन मन्दिरों की ऐसी शोभा है कि इसका वर्णन यहां की जबान नहीं कर सकती।

कोटान कोट ले जुबां, जानों बरनन करूं एक द्वार।
ए बरनन तो होवहीं, जो आवे माहें सुमार।। १२७ ।।

यहां करोड़ों जबान से एक दरवाजे की शोभा का वर्णन करना सम्भव नहीं है, क्योंकि शोभा बेशुमार है। वर्णन उसका होता है जो शुमार में आ जाए।

इन ठौर विलास बोहोत है, सो इन जुबां कह्यो न जाए।
ए लीला अर्स खावंद की, केहे केहे रूह पछताए।। १२८ ।।

यहां पर बड़े आनन्द होते हैं। वह इस जबान से नहीं कहे जा सकते। यह लीला श्री राजजी महाराज की है जिसका वर्णन करने से रूह पछताती है।

बल तो जुबां को है नहीं, ना कछू बुध को बल।
ए जोगवाई झूठे अंग की, क्यों कहे सुख नेहेचल।। १२९ ।।

यहां की जबान और बुद्धि तथा इस झूठे अंग की जोगवाई में अखण्ड सुख को वर्णन करने की शक्ति नहीं है।

जो कछू हिरदे में आवत, सो आवे नहीं जुबान।
चुप किए भी ना बने, चाहें साथ सुजान।। १३० ।।

जो शोभा हृदय में है वह जबान पर नहीं आती, परन्तु चुप होने से भी नहीं रहा जाता, क्योंकि हमारे सुन्दरसाथ वर्णन सुनना चाहते हैं।

कहे रूह सुख पावत, और सुख विचारे अतंत।
पर दुख पाऊं इन विध का, कछू पोहोंच न सके सिफत।। १३१ ।।

इनका वर्णन करने से और विचार करने से रूह को सुख होता है, परन्तु दुःख इस बात का है कि यहां के शब्द वहां की सिफत नहीं कर सकते।

Nijanand App

चारों तरफों हिंडोले, अर्स के गिरदवाए।
सब हिंडोलों हक संग, ए सुख अंग न समाए।। १३२ ।।

रंग महल के अन्दर चारों तरफ घेरकर हिंडोले आए हैं। इन्हीं हिंडोलों में श्री राजजी महाराज के साथ ऐसा सुख मिलता है, जो अंग में नहीं समाता।

भोम नौमी गोख (छज्जे) की बैठक

छज्जे बड़े नौमी भोम के, बोहोत बड़ो विस्तार।
बैठक धनी साथ की, बाहेर की किनार।। १३३ ।।

नवीं भोम के बड़े छज्जों की शोभा का विस्तार बहुत है। यहां श्री राजजी महाराज सखियों के साथ बाहर के किनारे पर बैठते हैं।

नजरों सब आवत है, इन ऊपर की बैठक।
देख दूर की बातें करें, रंग रस उपजावें हक।। १३४ ।।

छज्जे की बैठक के सामने दूर तक दिखाई देता है और श्री राजजी महाराज दूर-दूर की शोभा बता बताकर आनन्दित करते हैं।

जब बैठें जिन तरफ, तब तितहीं की जुगत।
बातें करें बनाए के, नूर अपने अपनायत।। १३५ ।।

जब जिस तरह बैठते हैं, तब उसी तरह की शोभा का बयान होता है। श्री राजजी महाराज अपनी रूहों से बातें बना-बनाकर करते हैं।

जब बैठें तरफ नूर की, तब तितहीं का विस्तार।
जित सिफत जिन चीज की, तिन सुख नहीं सुमार।। १३६ ।।

जब अक्षरधाम की तरफ बैठते हैं तब वहां की बातें बताते हैं। जहां जिस चीज की शोभा चाहिए, वहां के सुख बेशुमार हैं।

जब बैठें तरफ पहाड़ की, तब बरनन करें अति दूर।
तिन भोम के सुख को, सुमार नहीं जहूर।। १३७ ।।

जब पुखराज पहाड़ की तरफ बैठते हैं, तब दूर-दूर का वर्णन करते हैं और उनकी भोमों के सुख बेशुमार बतलाते हैं।

जब बैठें तरफ दरियाव की, घृत दूध दधी असल।
कायम सुख कायम भोम के, आवें न माहें अकल।। १३८ ।।

जब सागरों की तरफ बैठते हैं तो घृत, दूध, दही के असल कायम सुखों का तथा हवेलियों की भोमों का वर्णन करके बतलाते हैं। यह बेशुमार शोभा यहां की अक्ल में नहीं आती।

जब बैठें तरफ बड़े बन की, तब सोई सुख बरनन।
पसु पंखियों के इस्क की, कई विध करें रोसन।। १३९ ।।

जब बड़े वन की तरफ बैठते हैं तो वहां के सुखों का वर्णन करते हैं तथा वहां के पशु-पक्षियों के इश्क की कई तरह की बातें बताते हैं।

Nijanand App

और पहाड़ जोए जित के, कई विध की मोहोलात।
ताल कुण्ड कई चादरें, इन जुबां कही न जात।। १४० ।।

पुखराज पहाड़, जमुनाजी, पहाड़ की मोहोलातें, अधबीच के कुण्ड की चादरें, पुखराजी ताल, आदि की शोभा इस जबान से वर्णन नहीं होती।

या हौज या जोए के, कई विध देवें सुख।
जब हक आराम देवहीं, तब सोई करें रूहें रुख।। १४१ ।।

हौज कौसर तालाब या जमुनाजी की कई तरफ की शोभा बताकर श्री राजजी सुख देते हैं। जब जिस तरफ की शोभा बताते हैं तब उसी तरफ रूह की जाने की इच्छा होती है।

मोहोल मन्दिर जो मध्य के, सो हैं अति रोसन।
थंभों बेल फूल पांखड़ी, एक पात ना होए बरनन।। १४२ ।।

मध्य में जो महल और मन्दिर आए हैं, वह भी बड़े सुन्दर हैं। वहां के थंभ, बेल, फूल, पांखुड़ी के पत्ते का वर्णन नहीं हो सकता। ऐसी बेशुमार शोभा है।

तो मोहोल मन्दिर की क्यों कहूं, और क्यों कर कहूं दिवाल।
कई लाख खिड़की हवेलियां, कई लाखों पौरी पड़साल।। १४३ ।।

तो फिर महल, मन्दिर और दीवारों की शोभा कैसे बताएं? यहां पर कई लाख खिड़कियां हैं, हवेलियां हैं, रास्ते हैं और देहलाने हैं।

बैठ बीच नासूत के, अंग नासूती जुबान।
अर्स का बरनन कीजिए, सो क्यों कर होए बयान।। १४४ ।।

मृत्युलोक में बैठकर मृत्युलोक की जबान से अखण्ड परमधाम का वर्णन किस तरह से करें?

दसमी भोम चांदनी

दसमी भोमें चांदनी, ए सोभा है अतंत।
कई कदेले कुरसियां, बीच सोभा लेत तखत।। १४५ ।।

दसवीं भोम चांदनी की बेशुमार शोभा है। यहां पर बीच चौक में गद्दे, कुर्सियां और तख्त शोभा देते हैं।

कई बैठक मोहोल चांदनी, हक हादी इत आवत।
साथ सब रूहन को, सुख मन चाहे देवत।। १४६ ।।

इस चांदनी के चारों तरफ घेरकर महल आए हैं। श्री राजश्यामाजी और रूहें यहां जब आती हैं तो धनी उन्हें तरह-तरह के सुख देते हैं।

क्यों कहूं इन सुपेती की, उज्जल जोत अपार।
दो सै हांसों चांदनी, नाहीं रोसन नूर सुमार।। १४७ ।।

यहां के आसमान में चांदनी की जोत सफेद है। दो सौ एक हांस की चांदनी का नूर आसमान में समाता नहीं है। यह बेशुमार है।

Nijanand App

ए जो गुमटियां गिरदवाए की, नगीने एक अगले सौ दोए।
बारे हजार गुमटियां, सोभा लेत अति सोए।। १४८ ।।

आगे किनारे पर घेरकर दो सौ एक गुम्मट आए हैं और उनके अन्दर एक पंक्ति में बारह हजार गुमटियां शोभा देती हैं।

चारों तरफों चेहेबच्चे, ए सोभा अति सुंदर।
जल गिरत फुहारे मोतियों, चारों चांदनी अंदर।। १४९ ।।

बीच के चबूतरे के चारों तरफ चहबच्चे आए हैं जिनकी शोभा बेशुमार है। यहां चांदनी पर चारों तरफ से मोतियों की तरह फव्वारों से जल गिरता है।

गिरदवाए फूल चेहेबच्चे, ए सोभा जुदी जुगत।
अन्तर आंखें खोल के, ए सुख देखो अतंत।। १५० ।।

चहबच्चों के चारों तरफ फूल शोभा देते हैं। आत्मा के द्वार खोलकर देखो। यहां की शोभा बेशुमार है।

सोभा जल फूलन की, गिरद चारों किनार।
ए सोभा अतंत देखिए, जो कछू रूह करे विचार।। १५१ ।।

चांदनी पर चारों तरफ किनारे तक जल की और फूलों की शोभा है। रूहो! विचारकर शोभा को देखो।

बोहोत बड़ी इत बैठक, विध विध बेसुमार।
रात उज्जल अर्स चांदनी, ए सोभा अर्स अपार।। १५२ ।।

यहां चबूतरे पर बड़ी सुन्दर बैठक बनी है जिसकी शोभा बेशुमार है। पूर्णिमा के चांद की चांदनी में परमधाम की शोभा बेशुमार बढ़ जाती है।

जब हक हादी बीच बैठत, ले रूहें बारे हजार।
नंग जवेर इन जिमी के, गिरद बैठत साज सिनगार।। १५३ ।।

जब श्री राजश्यामाजी और बारह हजार रूहें बीच में सिनगार करके (सजकर) चारों तरफ बैठते हैं तब जमीन के जवाहरातों के नगों की शोभा बढ़ जाती है।

राज स्यामाजी बीच में, बैठें सिंघासन ऊपर।
ए तखत हक अर्स का, ए सिफत करूं क्यों कर।। १५४ ।।

श्री राजश्यामाजी बीच में सिंहासन पर बैठते हैं। श्री राजजी महाराज के परमधाम में इस सिंहासन की शोभा कैसे बयान करूं?

कबूं रूहें निकट, बैठें मिलावा कर।
हांसी रमूज सनमुख, पिएं प्याले भर भर।। १५५ ।।

कभी रूहें पास में, कभी मिलकर बैठती हैं और श्री राजजी महाराज के सामने हंसती हुई नजर से इश्क के प्याले पीती हैं।

कई विध की इत बैठक, जुदी जुदी जिनस।
चारों तरफों अर्स के, देखी और पे और सरस।। १५६ ।।

यहां कई तरह की बैठक हैं और कई तरह की शोभा है। रंग महल के चारों तरफ एक से एक अच्छी शोभा है।

Nijanand App

बड़ा मोहोल चौक चांदनी, चांद पूरन रह्या छिटक।
रात बीच सिर आवत, जब कबूं बैठे इत हक।। १५७ ।।

रंग महल की चांदनी के ऊपर चन्द्रमा पूर्ण रूप से चमकता है और रात्रि में सिर के ऊपर आ जाता है। जब श्री राजश्यामाजी यहां आकर बैठते हैं।

अर्स आए लग्या आकासें, उठ्या जोत अपनी ले।
चांद सितारे अंबर, आए मुकाबिल अर्स के।। १५८ ।।

रंग महल का तेज आकाश तक फैलता है। ऊपर से आकाश में चन्द्रमा और सितारे आमने-सामने शोभा देते हैं।

चारों तरफों देखिए, रूहें बारे हजार।
जिमीं अंबर में रोसनी, उठें किरनें नूर अंबार।। १५९ ।।

जहां बारह हजार रूहें बैठी हैं उसके चारों तरफ देखें तो जमीन से आसमान तक बेशुमार किरणें उठती हैं।

ऊपर चांदनी बैठक, देखिए नूर द्वार।
जोत नूर दोऊ सनमुख, अम्बर न माए झलकार।। १६० ।।

चांदनी के ऊपर बैठकर अक्षरधाम के दरवाजे की तरफ देखें तो दोनों दरवाजों की आमने-सामने की शोभा आसमान तक झलकती है।

देखों तरफ पुखराज की, या देखों तरफ ताल।
या जोत मानिक देखिए, होए रही अम्बर जिमी सब लाल।। १६१ ।।

पुखराज की तरफ या हौज कौसर ताल की तरफ या माणिक पहाड़ की जोत देखो। जहां की जमीन से आसमान तक लाल ही लाल रंग दिखाई देता है।

क्यों कहूं रोसनी चांद की, क्यों कहूं रोसनी हक।
क्यों कहूं रोसनी समूह की, जुबां रही इत थक।। १६२ ।।

चन्द्रमा की रोशनी, श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द का तेज तथा बारह हजार रूहों के समूह का तेज वर्णन करने में जबान थक जाती है।

केहे केहे जुबां इत क्या कहे, तेज जोत रोसन नूर।
सो तो इन जिमी जरे की, आकास न माए जहूर।। १६३ ।।

कहां तक यहां की जबान बयान करे? यहां के तेज की किरणें आकाश में नहीं समातीं। ऐसी इस परमधाम की जमीन के एक कण की हालत है।

ताथें महामत कहे ए मोमिनों, क्यों कहे जुबां इन देह।
रूहअल्ला खोले अन्तर, लीजो लज्जत सब एह।। १६४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्यामा महारानी ने सब तरह का ज्ञान दे दिया है। मैं इस झूठे संसार के तन और जबान से कैसे वर्णन करूं? तुम स्वयं इन सुखों की लज्जत लेना।

॥ प्रकरण ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ १७०२ ॥

Nijanand App